Maa Rewati College of Education Mandla (M.P)

2.4.5 Adequate skills are developed in students for effective use of ICT for teaching learning process in respect of
1. Preparation of lesson plans
2. Developing assessment tools for both online and offline learning
3. Effective use of social media/learning apps/adaptive devices for learning
4. Identifying and selecting/ developing online learning resources
5. Evolving learning sequences (learning activities) for on line as well as face to face situations

Sl. No.	Activities	Nature of activities	Duration	Nature of teacher involvement	Nature of student
1	Preparation of lesson plans	prepation of ppt with vedio and audio recordings wherever required	45 minits	instructional and suggestive,teachers also help of skilled students in presenting the content of the lesson.	students followed the guiedlines of the teacher.
2	Developing assessment tools for both online and offline learning	prepration of test paper for ofline assessment	40 mintues	teachers appriciate the students about designing test papers	students learned new technology and upgraded themselves.
3	Effective use of social media/learning apps/adaptive devices for learning	Use of zoom App,google meet	45 minitues	it was a collaborative exercise because these apps werenew to students.	students learned new things and they were very exicited
4	Identifying and selecting/ developing online learning resources	Zoom, Google Meet,YouTube Channel Mobile learning App,	45 minitues	teachers created online content , teaching material was also used through online mode	students used verious educational websites ,youtube channels , whatsapp in the teaching learning process.
5	Evolving learning sequences (learning activities) for online as well as face to face situations	the entire session was held through both mode online and ofline	45 minitues	Teachers appriciate the students about online teaching and offline mode of teaching	students were apprised about the traditional medium of teaching and online medium of teaching

Principal
Maa Reweti College of Education
Mandla (M.P.)

Run by: *Maa Rewati Educational and Welfare Society*

MAA REWATI COLLEGE OF EDUCATION

(Recognised by: N.C.T.E. & Affiliated to R.D.V.V. Jabalpur)

Jantipur Road, Badi Khairi, Mandla (M.P.)-481661

Phone: 0764-2291912, Website: www.mrcedu.com

Email: mrcedu1@gmail.com

Metric 2.4.5

Adequate skills are developed in students for effective use of ICT for teaching learning process in respect

Report :-

By doing B.Ed course in Maa Revati College, children learn to make lesson plans. In this, we teach children to teach through charts, models, posters etc. Then we send children to private and government schools for internship.

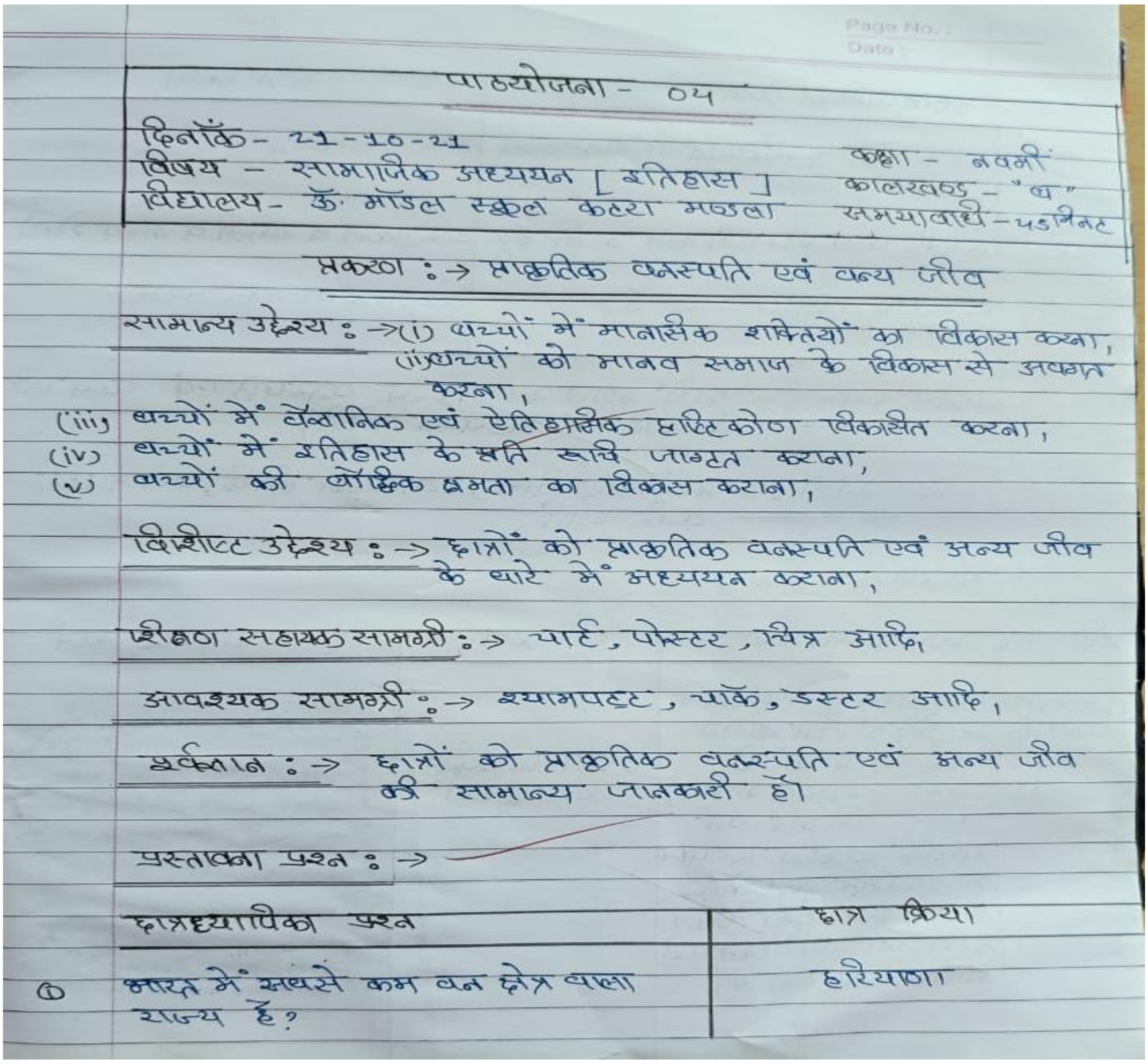

पाठयोजना - 04

दिनाँक - 21-10-21
विषय - सामाजिक अध्ययन [इतिहास]
विद्यालय - उ॰ मॉडल स्कूल कटरा मण्डला

कक्षा - नवमीं
कालखण्ड - "ब"
समयावधि - 45 मिनट

प्रकरण :-> प्राकृतिक वनस्पति एवं वन्य जीव

सामान्य उद्देश्य :-> (i) बच्चों में मानसिक शक्तियों का विकास करना,
(ii) बच्चों को मानव समाज के विकास से अवगत करना,
(iii) बच्चों में वैज्ञानिक एवं ऐतिहासिक दृष्टिकोण विकसित करना,
(iv) बच्चों में इतिहास के प्रति रुचि जाग्रत कराना,
(v) बच्चों की बौद्धिक क्षमता का विकास कराना,

विशिष्ट उद्देश्य :-> छात्रों को प्राकृतिक वनस्पति एवं अन्य जीव के बारे में अध्ययन कराना,

शिक्षण सहायक सामग्री :-> चार्ट, पोस्टर, चित्र आदि,

आवश्यक सामग्री :-> श्यामपट्ट, चॉक, डस्टर आदि,

पूर्वज्ञान :-> छात्रों को प्राकृतिक वनस्पति एवं अन्य जीव की सामान्य जानकारी हो

प्रस्तावना प्रश्न :->

छात्राध्यापिका प्रश्न	छात्र क्रिया
(1) भारत में सबसे कम वन क्षेत्र वाला राज्य है?	हरियाणा

छात्राध्यापिका क्रिया	छात्र क्रिया
② म०प्र० और छत्तीसगढ़ में वन-भाग कितने प्रतिशत है?	उ०2 30%
③ तुलसी किस रोग में काम आती है?	उ०2 जुकाम व खाँसी व अन्य रोगों में
④ वन्यजीव संरक्षण क्या है?	उ०2 समस्यात्मक प्रश्न।

उद्देश्य कथन :-> छात्रों आज हम प्राकृतिक वनस्पति एवं वन्य जीव के बारे में अध्ययन करेंगे।

शिक्षण विधि :-> प्रश्नोत्तर विधि, व्याख्यान विधि, श्यामपट्ट विधि आदि।

प्रस्तुतिकरण :->

शिक्षण बिंदु	छात्राध्यापिका क्रिया	छात्र क्रिया	श्यामपट्ट कार्य
1 प्राकृतिक वनस्पति से आशय	प्राकृतिक रूप से मानव के हस्तक्षेप के बिना उगने वाले पेड़-पौधों को प्राकृतिक वनस्पति कहते हैं। विभिन्न वनस्पति वन इत्यादि प्राकृतिक वनस्पति के अन्तर्गत आते हैं। हमारा देश विश्व के 12 मुख्य जैव विविधता वाले देशों में से एक है।	छात्र ध्यानपूर्वक व्याख्या सुनेंगे।	मानव के हस्तक्षेप के बिना उगने वाले पेड़-पौधों को प्राकृतिक वनस्पति कहते हैं।

शिक्षण बिंदु	छात्राध्यापिका क्रिया	छात्र क्रिया	श्यामपट्ट कार्य
1) प्राकृतिक वनस्पति से आशय	यहाँ लगभग 47000 प्रकार के पेड़-पौधे पाए जाते हैं, इस कारण भारत का विश्व में 10वाँ तथा एशिया में चौथा स्थान है।	छात्र ध्यानपूर्वक व्याख्या सुनेंगे,	भारत का विश्व में 10 वाँ तथा एशिया में चौथा स्थान है,
	सन् 2003 में देश में वनों का कुल क्षेत्रफल 6.8 लाख वर्ग कि.मी. था जो कुल क्षे. 20.55 % है। जो वनस्पति मूलरूप से भारतीय है उसे देशज वनस्पति कहते हैं, लेकिन जो पौधे भारत के बाहर से आए हैं, विदेशज पौधे कहते हैं, भारत में देशज एवं विदेशज दोनों ही प्रकार की वनस्पति पायी जाती है।	छात्र ध्यानपूर्वक व्याख्या सुनेंगे,	सन् 2003 में देश में वनों का कुल क्षे. 6.8 लाख वर्ग कि.मी. था जो कुल क्षेत्रफल 20.55% है,
2) प्रभावित करने वाले तत्व	वनस्पति को प्रभावित करने वाले तत्व- किसी क्षेत्र की वनस्पति के विकास पर उस क्षेत्र के भौगोलिक तत्वों का प्रभाव पड़ता है, इन तत्वों में वर्षा, तापमान, आर्द्रता मिट्टी, समुद्र तल से ऊँ. तथा भूगर्भिक संरचना महत्वपूर्ण है, ① धरातल ② जलवायु	छात्र ध्यानपूर्वक व्याख्या सुनेंगे,	भौगोलिक तत्व का प्रभाव ① तापमान ② वर्षा ③ आर्द्रता ④ मिट्टी आदि।

शिक्षण बिंदु	छात्राध्यापिका क्रिया	छात्र क्रिया	श्यामपट्ट कार्य
4) वनस्पति को प्रभावित करने वाले तत्व व महत्व तथा उपाय -	① धरातल → इसके अंतर्गत भूमि का उच्चावच एवं मिट्टी का स्वरूप सम्मिलित है, भूमि → भूमि का वनस्पति पर प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है, समतल भूमि पर कृषि की जाती है, मिट्टी → विभिन्न स्थानों पर अलग - अलग प्रकार की मिट्टी पाई जाती है, जो विविध प्रकार की वनस्पति का आधार है।	छात्र ध्यानपूर्वक व्याख्या सुनेगें,	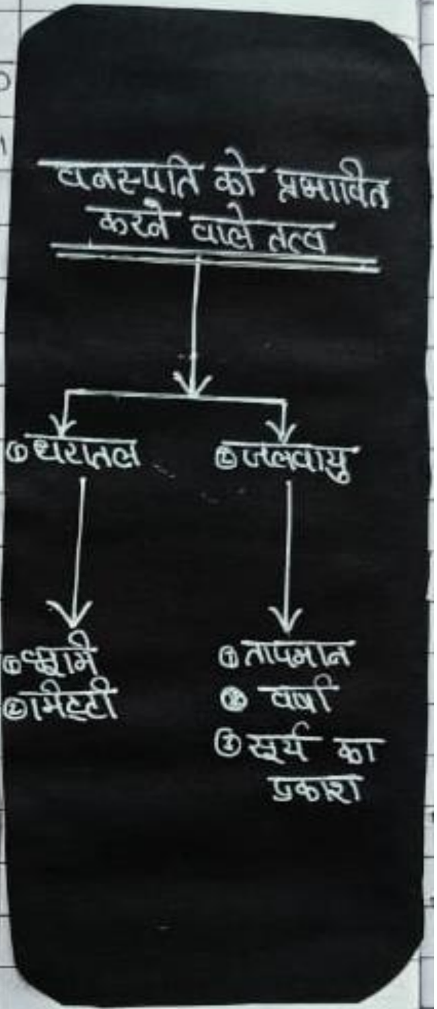
	② जलवायु → इसके अंतर्गत तापमान, सूर्य का प्रकाश, व वर्षा सम्मिलित है, तापमान → प्रत्येक पौधे के वृद्धि, अंकुरण एवं प्रजनन के लिए अनुकूल तापमान की आवश्यकता होती है। सूर्य का प्रकाश - किसी स्थान पर सूर्य के प्रकाश का समय उस स्थान के अक्षांश समुद्र तल से ऊँ. एवं ऋतु पर निर्भर करता है, वर्षा - भारी वाले क्षेत्र - में बड़े पेड़ व कम वर्षा वाले क्षेत्र में बौने वृक्ष घास तथा झाड़ियाँ पायी जाती है।	छात्र ध्यानपूर्वक व्याख्या सुनेगें, छात्र ध्यानपूर्वक व्याख्या सुनेगें।	

शिक्षण बिंदु	छात्राध्यापिका क्रिया	छात्र क्रिया	श्यामपट्ट कार्य
3] वनों का महत्व व उपाय	वन राष्ट्रीय संपदा है। यह मानव के लिए विभिन्न प्रकार से उपयोगी है, वन उत्पाद व संरक्षण दोनों प्रकार के कार्य करते हुए देश के आर्थिक विकास में योगदान देते है, वनों से हमें दो प्रकार के लाभ प्राप्त होते है, प्रत्यक्ष लाभ एवं अप्रत्यक्ष लाभ,	छात्र ध्यानपूर्वक व्याख्या सुनेगें,	वनों से हमें दो प्रकार के लाभ प्राप्त होते हैं, ① प्रत्यक्ष लाभ, ② अप्रत्यक्ष लाभ,
	प्रत्यक्ष लाभ → वनों से हम इमारती लकड़ी, ईंधन की लकड़ी, पशुओं के लिए चारा, लघु और कुटीर उद्योगों के लिए कच्चा माल, मूल्यवान छोटे उत्पाद तथा औषधियों हेतु कच्ची सामग्री प्राप्त होती है, यह अनेक लोगों के लिए आजीविका का मुख्य साधन है।	छात्र ध्यानपूर्वक व्याख्या सुनेगें,	① प्रत्यक्ष लाभ के उदा.- (i) लकड़ी (ii) पशुओं के लिए चारा (iii) लघु और कुटीर उद्योगों के लिए कच्चामाल, (iv) औषधियाँ हेतु कच्ची सामग्री,
	अप्रत्यक्ष लाभ → वनों के प्रत्यक्ष लाभों से भी अत्यधिक महत्वपूर्ण अप्रत्यक्ष लाभ है। वन हमारी प्रकृति एवं संस्कृति के अभिन्न अंग है।	छात्र ध्यानपूर्वक व्याख्या सुनेगें,	वन हमारी प्रकृति एवं संस्कृति के अभिन्न अंग हैं,

शिक्षण बिंदु छात्राध्यापिका क्रिया	छात्र क्रिया	श्यामपट्ट कार्य
वन संरक्षण के उपाय- ① वन संरक्षण कानून 1980 वनों के विनाश तथा वनभूमि का दूसरे कार्यों के लिए उपयोग को रोकना है, ② वन रोपण एवं बंजर भूमि का विकास, ③ मौजूदा वनों में पुनः रोपण, ④ वनों की नियन्त्रित एवं वैज्ञानिक विधि से कटाई ⑤ पशुचारण और ईंधन हेतु वृक्षों एवं झाड़ियों की कटाई पर रोक,	छात्र ध्यानपूर्वक व्याख्या सुनेगें,	
औषधीय वनस्पतियाँ → भारत प्राचीन समय से ही जड़ी-बूटियों के लिए विख्यात रहा है, आयुर्वेद में लगभग 2000 पादपों का वर्णन है, जिनमें से कम से कम 500 निरंतर प्रयोग में आते है, भारत में प्रायः औषधि के लिए प्रयोग होने वाले कुछ प्रमुख पादप है- सर्पगंधा, नीम तुलसी, जामुन, बबूल कचनार, अर्जुन आदि है।	छात्र ध्यानपूर्वक व्याख्या सुनेगें, छात्र ध्यानपूर्वक व्याख्या सुनेगें,	**औषधीय वनस्पतियाँ** ① नीम → जैव व जीवाणु प्रतिरोध हेतु। ② बबूल → फुन्सी में लाभदायक व शारीरिक शक्ति में वृद्धि हेतु उपयोगी, ③ कचनार → फोड़ा व दमारोग के लिए उपयोगी, ④ सर्पगंधा → रक्तचाप के उपचार के लिए, ⑤ तुलसी → जुकाम और खाँसी तथा कई अन्य रोगों के लिए,

शिक्षण बिंदु	छात्राध्यापिका क्रिया	छात्र क्रिया	श्यामपट्ट कार्य
	वन का हमारे जीवन में बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका है, वन पृथ्वी के संतुलन को बनाये रखता है। पेड़ पौधों को बचाना एक बहुत जरूरी कार्य बन गया है।	छात्र ध्यान पूर्वक व्याख्या सुनेंगे	"पेड़-पौधे मत करो नष्ट, साँस लेने में होगा कष्ट"
	वनों के प्रकार -> पूरे विश्व में कई प्रकार के वन पाए जाते हैं, इनसभी वन को विभिन्न प्रकार की श्रेणी में बाँटा गया है। ->	छात्र ध्यानपूर्वक व्याख्या सुनेंगे,	वनों के प्रकार ↓ ① पर्णपाती वन, ② ऊष्णकटिबंधीय वर्षा वन, ③ उप ऊष्णकटिबंधीय वन, ④ टेम्परेट वन,
	वनों को कैसे बचाया जाए -> वनों को बचाने के लिए हमें कई तरह के कदम उठाना चाहिए, ① सभी लोगों को वृक्षारोपण और संरक्षण करना चाहिए, ② जल संरक्षण करना चाहिए ③ प्लास्टिक का उपयोग नहीं करना चाहिए, ④ जैविक खाद का इस्तेमाल करना चाहिए, ⑤ हमें वनों को बचाने के लिए बनाये गये नियमों का पालन करना चाहिए,	छात्र ध्यानपूर्वक व्याख्या सुनेंगे,	वनों से प्राप्त वस्तुएँ ↓ ① लकड़ी ② बाँस ③ पशुओं का चारा ④ ऑक्सीजन ⑤ आयुर्वेद की दवाएँ ⑥ बीज ⑦ प्राकृतिक औषधि ⑧ जड़ी-बूटियाँ आदि,

Page No.:
Date:

शिक्षण बिंदु	छात्राध्यापिका क्रिया	छात्र क्रिया	श्यामपट्ट कार्य
3| वन्य जीव संरक्षण	भारत एक वन्य जीव संपन्न देश है, भारत में संसार की लगभग 6.5% वन्य जीव प्रजातियाँ पाई जाती है, विशिष्ट वन्य जीव - सिंह, बाघ, हाथी, हिरण, सोन चिड़िया, बारहसिंघा आदि है, वनों के विनाश ने पेड़-पौधों और वन्य जीवन के लिए संकट उत्पन्न कर दिया है, जिससे कई वन्य पशु - पक्षी प्रजातियाँ विलुप्त होने के कगार पर पहुँच गई है।	छात्र ध्यानपूर्वक व्याख्या सुनेगें, छात्र ध्यानपूर्वक व्याख्या सुनेगें,	भारत में संसार की लगभग 6.5% वन्य जीव प्रजातियाँ पाई जाती हैं, विशिष्ट वन्य जीव जैसे- ↓ सिंह, बाघ, हाथी, हिरण, सोन चिड़िया, बारहसिंघा आदि,
	संरक्षण के उपाय -> ① 1972 में भारत में वन्य जीव सुरक्षा अधिनियम पारित हुआ, ② 1973 में बाघ विकास कार्यक्रम परियोजना को प्रारम्भ किया गया, ③ 1975 में मगर प्रजनन एवं प्रबन्ध परियोजना प्रारम्भ कर मगरों को सुरक्षित किया गया,	छात्र ध्यानपूर्वक व्याख्या सुनेगें,	संरक्षण के उपाय के लिए गए प्रयास -> ① वन्य जीव सुरक्षा अधिनियम, ② बाघ विकास कार्यक्रम परियोजना, ③ मगर प्रजनन एवं प्रबन्ध परियोजना,

शिक्षण बिंदु	छात्राध्यापिका क्रिया	छात्र क्रिया	श्यामपट्ट कार्य
	संसार की लगभग 5 लाख जीव प्रजातियों में लगभग 75,000 भारत में है, तथा पक्षियों की लगभग 12000 प्रजातियाँ व 900 उपजातियाँ भारत में विद्यमान है।	छात्र ध्यानपूर्वक व्याख्या सुनेंगे।	भारत में प्रजाति व पक्षी व उपजातियों की संख्या प्रजातियाँ → 75000 पक्षियाँ → 12000 उपजातियाँ → 900

बोधात्मक प्रश्न :→

छात्राध्यापिका क्रिया	छात्र क्रिया
① वनों से हमें कितने प्रकार के लाभ प्राप्त होते हैं?	उ० दो [प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष लाभ]
② वनस्पति को प्रभावित करने वाले कितने कारक हैं?	उ० दो [धरातल व जलवायु]
③ प्राकृतिक वनस्पति किसे कहते हैं?	उ० प्राकृतिक रूप से मानव के हस्तक्षेप के बिना उगने वाले पेड़पौधों को कहते हैं।
④ भारत में लगभग कितने प्रकार के पेड़-पौधे पाए जाते हैं?	उ० 47000 प्रकार के।
⑤ 1972 में कौन-सा अधिनियम पारित हुआ?	उ० वन्य जीव सुरक्षा अधिनियम

पुनरावलोकन प्रश्न :→ ① वन्य जीव सुरक्षा अधिनियम कब पारित हुआ?
② भारत में लगभग कितने प्रकार के पेड़-पौधे पाए जाते हैं?
③ प्राकृतिक वनस्पति किसे कहते हैं?
④ वनस्पति को प्रभावित करने वाले कारक कौन-कौन से हैं?
⑤ वनों से हमें कितने प्रकार के लाभ प्राप्त होते हैं?

कक्षा कार्य :->

सत्य / असत्य बताइए -

① जो वनस्पति मूलरूप से भारतीय है उसे विदेशज वनस्पति कहते है। ( )

② कृषि का वनस्पति पर प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है। ( )

③ नीम रक्तचाप के उपचार के लिए उपयोग मे लाया जाता है। ( )

एकशब्द में उत्तर दीजीए -

① 1973 में किस परियोजना का प्रारंभ किया गया?

उ०

② 1975 में किन्हे संरक्षित किया गया?

उ०

③ देश में वनों का कुल क्षेत्रफल 6.8 लाख वर्ग कि.मी. किस सन मे था?

उ०

गृहकार्य :-> ① वनों के प्रकारों व वन्य जीव वितरण का विस्तार पूर्वक अध्ययन करेंगे।

② म०प्र० के राष्ट्रीय उद्यान की चार्ट रेखा बनाइए।

पर्यवेक्षक के हस्ता०

विषय शिक्षक के हस्ता०

प्राध्यापिका के हस्ता०

टिप्पणी:-> कक्षा कार्य के दौरान कार्य उत्तम रहा।

प्रधानाचार्य

Principal
Maa Reweti College of Education
Mandla (M.P.)

Run by: *Maa Rewati Educational and Welfare Society*

MAA REWATI COLLEGE OF EDUCATION

(Recognised by: N.C.T.E. & Affiliated to R.D.V.V. Jabalpur)

Jantipur Road, Badi Khairi, Mandla (M.P.)-481661

Phone: 0764-2291912, Website: www.mrcedu.com

Email: mrcedu1@gmail.com

Metric 2.4.5

Adequate skills are developed in students for effective use of ICT for teaching learning process in respect of :

LIST OF SUPPORTING DOCUMENTS

Sr. No.	Name of Document	Link of Document
01	**Preparation of lesson plans** **B.A B.Ed & B.Ed** **Online (You Tube Channel) Motivation by Diksha**	 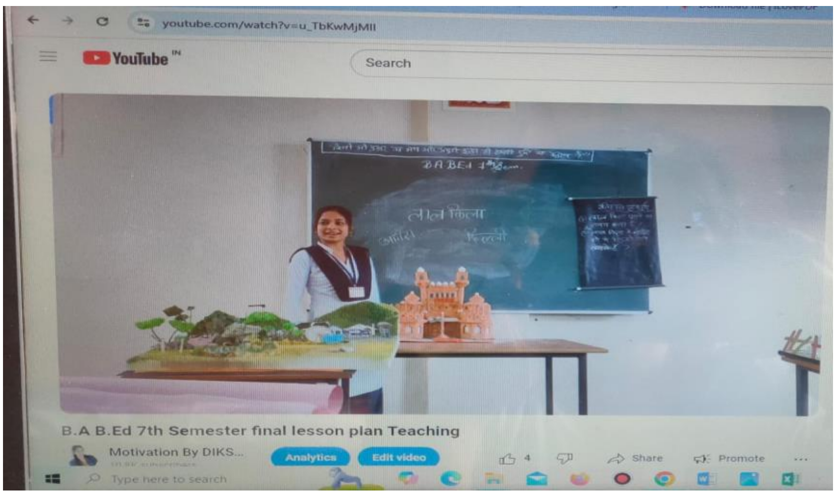

B.A B.Ed & B.Ed

Online (You Tube Channel) Motivation by Diksha

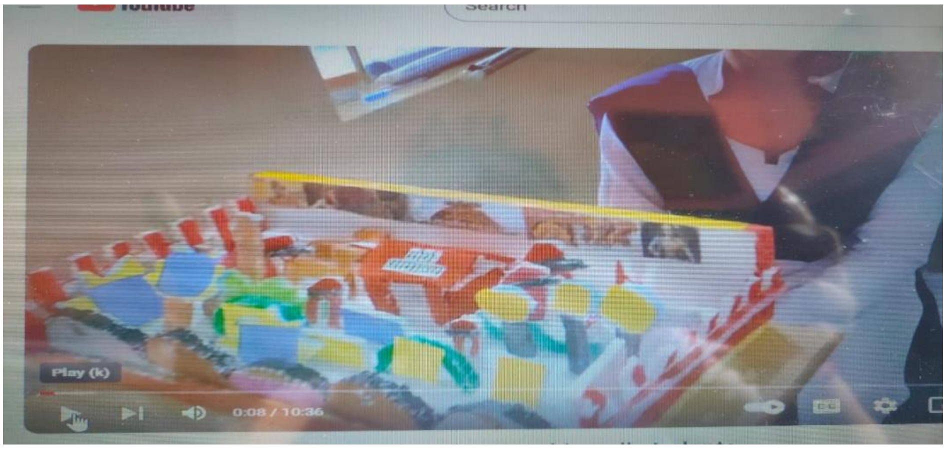

02	**Ofline Learning** **Lesson plans** **Model , Poster, Teaching Aid**	

	Lesson plans **Model , Poster, Teaching Aid**	 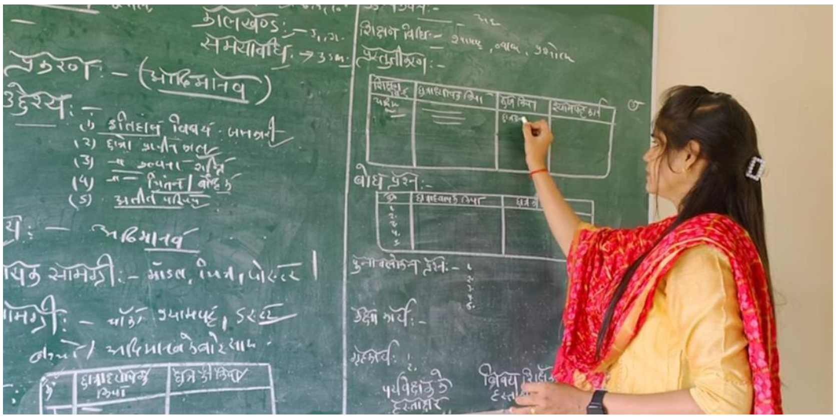

03	**Effective use of socia media /learning apps /adaptive devices for learning** Use of zoom App,google meet **(You Tube Channel l**	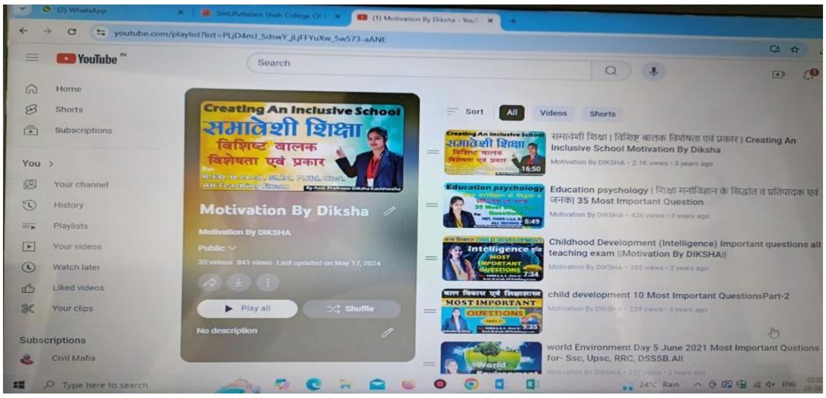 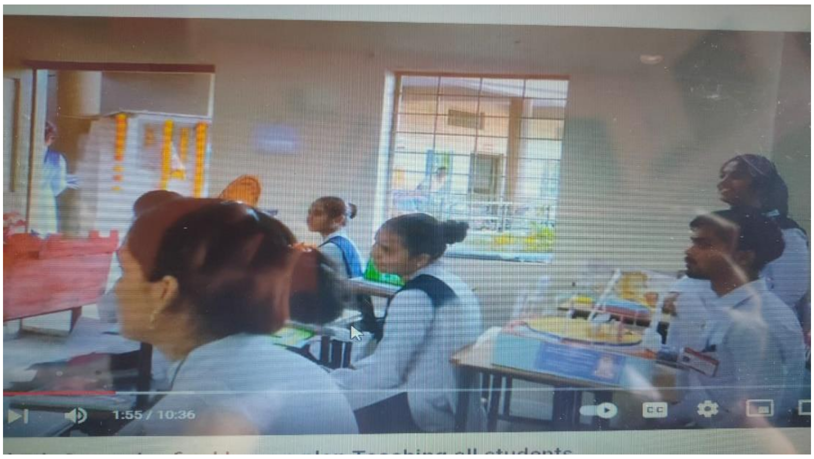 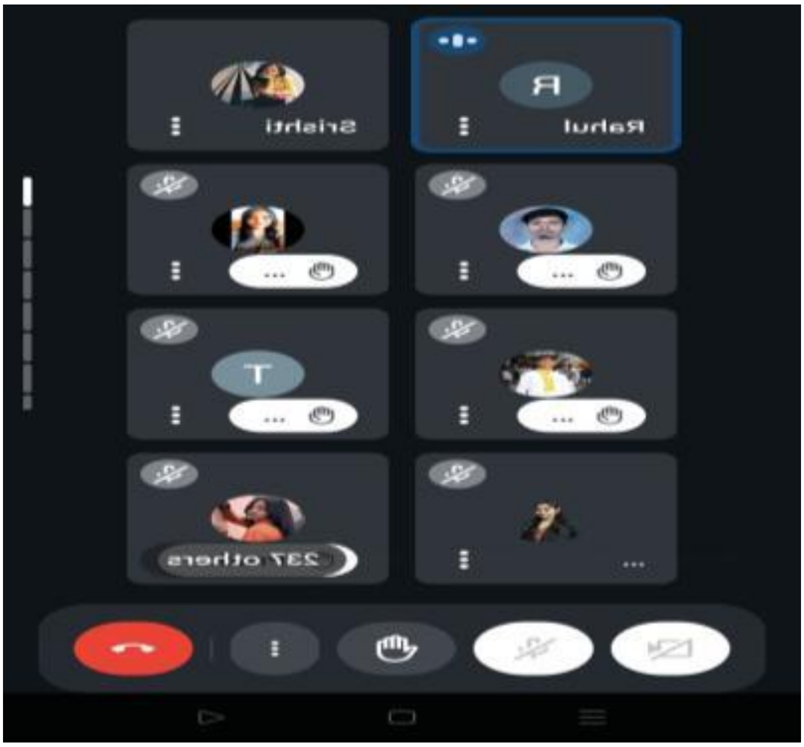

Principal
Maa Reweti College of Education
Mandla (M.P.)